# स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्या कला संकाय अंतर्गत विद्यावाचस्पति (Ph.D.) हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

## शोध प्रबंध की रूपरेखा

## (Ph.D.Synopsis)

**शोध का शीर्षक**

# "कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन"


## शोधकर्ता

**शेख हुसैन मैनोद्दीन**

(M.A. M.Phil. SET.)

## शोधनिर्देशक

**डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी**

(M.A.M.Phil.Ph.D. )

सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागप्रमुख

दयानंद कला महाविद्यालय,लातूर


## शोधकेन्द्र

हिंदी भाषा साहित्य अनुसंधान केन्द्र

हिंदी विभाग

दयानंद कला महाविद्यालय,लातूर

## मार्च 2022

# “कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन”

## विषयानुक्रमणिका


| अनुक्रम | शीर्षक | पृष्ठांक |
|---|---|---|
| 1. | भूमिका (Introduction) | 3 |
| 2. | विषय चयन की प्रेरणा (Topic Selection Motivation) | 4 |
| 3. | अनुसंधान का उद्देश्य (Research Objective) | 5 |
| 4. | अनुसंधान की पध्द्तियाँ (Research Methods) | 6 |
| 5. | अनुसंधान कार्य के शीर्षक (Title of Research Work) | 6 |
| 6. | अनुसंधान कार्य (Research Work) | 7 |
| 7. | अनुसंधान का महत्व (Importance of Research) | 10 |
| 8. | **परिशिष्ट (Appendix)**<br>**संदर्भ ग्रंथ सूची**<br>(अ) मूल ग्रंथ<br>(आ) आधार ग्रंथ<br>(इ) हिन्दी कोश ग्रन्थ<br>(ई) पत्र-पत्रिकाएँ<br>(उ) अंग्रेजी कोश<br>(ऊ) Websites | 13 |

# “कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन”

## 1. भूमिका : (Introduction) :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के कारण ही उसका अस्तित्व बरकार है, और समाज में रहकर ही वह अपनी पहचान निर्मित करता है। प्राचीन काल में सामाजिक रूप से उसका अस्तित्व छोटे-छोटे कबीले में प्रारंभ होता है। इन आदिम समाजों को प्रकृति एवं वन में विचरण करने वाले विभिन्न प्राणियों से मात्र अस्तित्व के लिए भी संघर्ष के एक कठिन दौर से गुज़रना पड़ा। इस संघर्ष एवं अनुभव के आधार पर उसके कौशल एवं संगठनात्मक शक्ति में निरन्तर विकास होता गया। धीरे-धीरे उसकी शक्ति में वृद्धि होने लगी। शक्ति में वृद्धि के साथ ही उपलब्ध संसाधनों के आधार पर उसकी जनसंख्या का भी विकास होता गया। जनसंख्या के विकास के साथ ही अपने ऐतिहासिक विकासक्रम में ये जनजातियाँ सीमित साधनों पर प्रभुत्व के लिए एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने लगी।

प्रतिस्पर्धा का यह दौर भी हज़ारों वर्षों तक चला और ये जनसमूह अनेक दिशाओं में यात्राएँ करते रहे। अनेक मिश्रित समुदायों का उदय हुआ जो स्वयं नई-नई जातियाँ अथवा जनजातियाँ बनती गई। धीरे-धीरे सभ्यता के विकास क्रम में ये समुदाय समतल नदी घाटियों पर बस गए और स्थाई कृषि का भी विकास हुआ। स्थाई कृषि के फलस्वरूप ग्रामीण समुदायों का उदय हुआ और इन ग्रामीण समुदायों में विभिन्न समूहों के सदस्य भी घुलमिल गए। जाति पर आधारित व्यवसायों की भी स्थापना हुई। इस प्रकार धीरे-धीरे हज़ारों वर्षों की इस प्रक्रिया में गाँव स्वतन्त्र इकाई के रूप में स्थापित होते गए।

ये जनजातियाँ आरम्भ से ही जंगलों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में रह रही हैं, इसी कारण मैदानी लोगों एवं सभ्य समाज से इनका संपर्क न के बराबर ही रहा। लेकिन इन जनजातियाँ का यह अलगाव तब समाप्त हुआ जब 21 वीं सदी के शुरू में रेल जैसे संचार माध्यमों ने इनके इलाकों में प्रवेश किया। इसके साथ ही सभ्य समाज के स्वार्थी लोगों ने ज़मीन की भूख मिटाने के लिए जनजातीय क्षेत्रों में घुसपैठ करके उन्हें भूमिहीन एवं बेघर कर दिया। अपने वनों को छोड़कर रोजगार की तलाश में जब ये मैदानी इलाकों में आए तो साहूकारों एवं व्यापारियों के शोषण ने जनजातियों को भीषण तबाही के गर्त में धकेल दिया। स्वतन्त्रता से पहले भी और पश्चात् भी सरकार ने इन जनजातियों को एक समस्या से अधिक कुछ नहीं समझा। इन्हीं सब कारणों से एवं अशिक्षित एवं अविकसित होने के कारण ये जनजातियाँ सभ्य समाज की विकास की गति से जुड़ नहीं पाती। इसीलिए आज इन जनजातियों को विकास की महत्ती आवश्यकता है।

आदिवासी समाज एक ऐसा समाज रहा है, जिसमें प्राचीन काल के परम्पराओं के अवशेष अभी भी देखे जा सकते हैं। आदिवासी समाज सभ्य समाज से जितना दूर रहा है, नजदीक से देखने पर इस समाज की

प्रकृति के प्रति प्रतिबद्धता उतनी ही दृढ़ रही है। 'लोकबाबू' के कथा साहित्य में आदिवासी जीवन की दुरुहता तथा उनके विरुद्ध हो रहे अत्याचारों को बहुत ही बारीकी से दर्शाया गया है। उनकी रचनाओं में आदिवासियों के दृष्टिकोण तथा उनकी समस्याओं को विभिन्न स्तरों से सशक्त एवं सही ढ़ंग से रखना उनका ध्येय रहा है। लेखक ने अपने कथा साहित्य में उनके ऊपर हुए अत्याचारों और सामाजिक बहिष्कार का चित्रण किया है।

आदिवासी जनजातियों का संकट सभ्य समाज के बीच अपने अस्मिता एवं अस्तित्व की लड़ाई में उनके साथ जीवन के कई क्षेत्रों से रहा है। गरीबी और अशिक्षा जैसे अभाव की कटु अनुभूतियों के बीच उनका जीवन अभिसप्त है। भाषा संस्कृति के साथ-साथ उनके रहन-सहन, वेश-भूषा तथा अन्य जीवन व्यवहारों पर आधुनिकता की चमक-दमक का प्रभाव दिखाई पड़ने लगा है। सभ्य समाज से दूर वन उत्पादित वस्तुओं और संस्कृति को सुरक्षित किये हुये आदिवासी समाज के जीवन का यह दुर्भाग्यपूर्ण सच है, जिसे यह समाज रोज लड़ता है, रोज जीता है, जिसमें स्वयं को रोज हताश पाता है। 'लोकबाबू' के कथा साहित्य में जनजातीय जीवन संघर्ष और पीड़ा विशेष रूप से अभिव्यक्त हुआ है।

'लोकबाबू' जी ने भी अपने सम्पूर्ण साहित्य में मानवीयता, भाईचारा, देश-सेवा, परोपकार, क्षेत्रीय प्रेम, मानवता आदि सकारात्मक तत्त्वों के साथ राजनीतिक विद्रूपता, अवस्था, भ्रष्टाचार, ग्राम-दुर्दशा, अनीति अन्याय आदि नकारात्मक तत्त्वों का उल्लेख भी किया है। 'लोकबाबू' जी के साहित्य की सर्वाधिक विशेषता यह है कि, इन्होंने जो देखा-भोगा है, उसे ही अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। इसी कारण इनका लिखा पाठक विश्वास अर्जित कर पाता है।

'गद्यसाहित्य' में किसी-न-किसी स्तर पर 'रोचकता' या 'मनोरंजन' के गुण उपस्थित हैं। जिसके कारण यह पाठकों के मन को बांधकर रखने की क्षमता रखता हैं। जब व्यक्ति कुछ विचार विमर्श करता है, तो उसके मन और मस्तिष्क में बहुत सारे भाव उत्पन्न होने लगते हैं। उन भावों को रूप देने के लिए वह लेखन का प्रयोग करता है। इस दृष्टि से भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए 'गद्यसाहित्य' बेहतर है। आज आधुनिक समय में 'गद्यसाहित्य' एक ऐसी विधा है, जिसमें कोई भी साहित्यकार अपने भावों एवं विचारों को पूरी आत्मीयता एवं स्वतंत्रता के साथ अभिव्यक्त कर सकता है। इसी कारण हिंदी साहित्य की विधाओं में उपन्यास और कहानी विधा का अपना विषेश स्थान है। शायद यही वजह रही कि, मैंने अपने विचारों को और अधिक विस्तार देने के लिए अपना रुख उपन्यास और कहानी की ओर आकर्षित किया है। इसीलिए शोधकार्य करने के लिए **"कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन"** का चयन किया है।

## 2. विषय चयन की प्रेरणा : (Topic Selection Motivation) :

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में जो अच्छा एवं बुरा होता है, साहित्यकार उसे अपने साहित्य में स्थान देता है। समाज में जिस व्यवस्था की तत्कालीन समय में आवश्यकता होती है,उस व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए भी साहित्य की रचना की जाती है, अथवा किसी विशेष कार्य के लिए ऐसे विशेष विषय का चयन

किया जाता है। आज हमारा समाज अपने संस्कारों, मानवीय मूल्यों एवं देश के प्रति अपने कर्तव्यों को भूलता जा रहा है। आदिवासी के प्रति  सेवा का भाव आज अति आवश्यक है। इसी 'आदिवासी चेतना' को प्रकाश में लाने के लिए इस विषय का चयन किया गया। **"कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन"** में आदिवासी, दलित चेतना व सामाजिक मूल्यों से सराबोर है।

मैंने हाल ही में 'लोकबाबू' जी  की आदिवासी और दलित भावनाओं से परिपूर्ण उपन्यास 'बस्तर बस्तर' लिए' पढ़ा । यह उपन्यास  मेरे मानस पटल पर उनके विचारों का मेघाडम्बर बनकर छा गया । प्रस्तुत उपन्यास का जब मैं कभी अध्ययन, मनन और चिन्तन करता तो मेरे हृदय में एक आदिवासी और दलित चेतना-सी फूट पड़ती है, और मुझ में एक प्रेरणा-सी जाग्रत हो उठती थी मानों कोई मुझे भीतर से झकझोर रहा है, जिसमें एक ओर आदिवासीयों की स्वातंत्र की व्याकुलता है। तो दूसरी ओर समर्पण का उदात्त एवं पावन भावाभिव्यक्ति है, जिसने मुझे 'लोकबाबू'जी के गद्यसाहित्य के अध्ययन के लिए प्रेरित किया ।

उनके साहित्य में 'आदिवासी चेतना' दिल को छू लेने वाली है। वैसे देखा जाए तो मुझे उनकी अन्य कहानियॉ को भी पढ़ने की जिज्ञासा मन मे निर्माण हुई। और मैनें सोचा की क्यों न पीएच-डी. शोध कार्य के लिए मैं 'लोकबाबू' के समग्र साहित्य का अध्ययन करूं । बस यही बात मैंने मेरे मार्गदर्शक डॉ.प्रदीप सुर्यवंशी सर से कहा, तो उन्होंनें 'लोकबाबू'  के उपन्यास की सक्षिप्त कथा पढ़ लिये, और तुरंत मुझसे कहा कि, हॉं बहुत सही उपन्यास  है, आज के युग में नई 'आदिवासी चेतना' को उन्होंने अपने ढंग से कहा है। मेरी तरफ से तो उनके साहित्य पर शोधकार्य के लिए अनुमती है। और इसी तरह कि मैं उनके संबन्ध में और जादा कुछ लिखूँ। इसी प्रसंग को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने शोध-प्रबन्ध के लिए **"कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन"** विषय को चुना।

## 3. अनुसंधान का उद्देश्य : (Research Objective) :

'लोकबाबू' जी इक्कीसवीं सदी के प्रमुख दीपस्तंभ तथा आदि प्रवर्तक हैं। 'लोकबाबू' के साहित्य का अनेक दृष्टियों से अवलोकन करने का पृथक प्रयास किया जायेगा। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि, आज भी वह कार्य अधूरा है। 'लोकबाबू के साहित्य के विविध पक्षों को पृथक-पृथक अथवा समग्र रूप से गृहीत करके कुछ समीक्षकों एवं विद्वानों ने अनेक समीक्षात्मक ग्रन्थों का सृजन किया है। लेकिन शोधार्थियों ने उनके साहित्य पर अभी तक स्वतंत्र रूप से शोध कार्य नहीं हुआ है। **"कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन"** इस अनुसंधान कार्य के पीछे मेरे अहम् उद्देश्य है, जो इस प्रकार है।

1. आधुनिक कथा साहित्य में नवीन चेतना एवं यथार्थ का संचार करने वाले उत्कृष्ट कोटि के कथाकारों में 'लोकबाबू' जी का स्थान सर्वोपरि है।
2. आज भी अपना समाज शोषित-पीड़ित है। इसी पीड़ित प्रवृत्तियों को परखना एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

3. आदिवासी चेतना और दलित चेतना को व्यक्तिगत भावभूमि से उपर उठाकर सामाजिकता के स्तर पर पहुँचाना।
4. उत्तर आधुनिकता की दौड़ में शहरीकरण के कारण गाँव का प्रत्येक व्यक्ती शहर की ओर स्थलांतर करना चाहता है,या फिर कर रहा है। मूलतः स्थलांतर के साथ-साथ अपने शहर के भाग दौड़ को दुनियाँ में स्वयं को भूल गया है। ऐसे व्यक्तियों को आदिवासी लोकजीवन के प्रति सजग करना ही मेरे अनुसंधान का उद्देश्य है।
5. रचनाकारों की भाषा मूलतः स्वानुभूत सत्य है। इस भाषा की विशेषताएँ तथा भाषा-शैली को परखना मेरे अनुसंधान का उद्देश्य रहा है।

इस दृष्टि से **"कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन"**का व्यापक परिचय देना तथा कुछ रहस्यों को खोलना ही मेरे शोधकार्य का मूल लक्ष्य रहा है। इनके उपन्यासों में 'आदिवासी चेतना' का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। ऐसी ही 'आदिवासी चेतना' का परिवेश हम पर भी प्रभाव डालता है, जो हमारे ही अनुभवों से जुड़ जाता है। मेरा उदेश्य और लक्ष्य उपन्यास और कहानी से संबंधित 'आदिवासी चेतना' को अवगत कराना है।

## 4. अनुसंधान की पध्द्तियाँ : (Research Methods) :

ज्ञान का कोश इतना विस्तृत है कि, इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए अध्ययनार्थी को उसे छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर ज्ञान ग्रहण करना पड़ता है । इसलिए शोध कार्य की व्यापकता को देखकर मैंनें **"कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन"** निम्नलिखित अनुसंधान पद्धतियों का सहारा लिया है। जैसे अध्ययन-अध्यापन पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति, प्रयोगात्मक पद्धति, पूर्व अनुसंधान व्यक्ति से साक्षात्कार प्रश्नावली पद्धति तथा निष्कर्ष पद्धति आदि का सहारा लिया है।

## 5. अनुसंधान कार्य के शीर्षक : (Title of Research Work) :

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने इस शोधकार्य **"कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन"** को निम्नांकित सात अध्याय शीर्षक के आधार पर विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय : आदिवासी साहित्य एक सैध्दांतिक अध्ययन

व्दितीय अध्याय : कथाकार लोकबाबू : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

तृतीय अध्याय : लोकबाबू के कथा साहित्य का कथ्यगत अध्ययन

चतुर्थ अध्याय : लोकबाबू के कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श

पंचम अध्याय : लोकबाबू के कथासाहित्य में जनजीवन

षष्ठ अध्याय : शिल्प विधान

सप्तम अध्याय : उपसंहार

अंत में उपसंहार प्रस्तुती के बाद निष्कर्ष निकाला गया है, और परिशिष्ठ में, आधार ग्रंथ, मूल ग्रंथ एवं पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

## 6. अनुसंधान कार्य : (Research Work) :

हिन्दी कथा साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। अत: इसी विस्तार को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित शोध-कार्य में सुप्रसिद्ध **"कथाकार लोकबाबू के साहित्य का अनुशीलन"** को आधार बनाकर विषय के रूप में चयन किया गया है। उपर्युक्त सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हो जाता है कि, प्रस्तुत अनुसंधान कार्य निम्नलिखित शीर्षक के आधार पर किया गया है। यह अनुसंधान कार्य अध्ययन की दृष्टि से अभी तक पूरी तरह अछूता है।

### प्रथम अध्याय : आदिवासी साहित्य एक सैध्दांतिक अध्ययन :

इस अध्याय में 'आदिवासी' साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। जिसमें आदिवासी शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ, स्वरूप, परिभाषा, आदिवासी समाज का संघर्षशील जीवन को रेखांकित किया जायेगा। आदिवासी जनसमुदाय हमेशा महत्वाकांक्षी, अवसरवादी, आत्मकेन्द्रित, असन्तुष्ट, समझौतावादी, परिवेश का सामान्य परिचय, दिया जायेगा तथा हिंदी साहित्य में आदिवासी साहित्य का उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला जायेगा।

### व्दितीय अध्याय : कथाकार लोकबाबू : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

इस अध्याय में 'लोकबाबू' जी के व्यक्तित्व, कृतित्व और हिन्दी कथाकारों में 'लोकबाबू' का स्थान मुख्य शीर्षकों में रखा गया है। जन्म, शिक्षा-दीक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, वैवाहिक जीवन, व्यवसाय, पुरस्कार एवं यात्राएँ, कहानी, उपन्यास और अन्य साहित्य आदि का विवेचन किया जायेगा।

'लोकबाबू' हिन्दी कथा साहित्य के सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। इनका जन्म 10 जून 1954 को मोतीपुर, राजनांदगॉंव, छत्तीसगढ़ में हुआ है। छत्तीसगढ़ अंचल के लोकजीवन को संवेदनशील ढंग से चित्रित करने तथा सामाजिक सरोकारों के लिए आपके कथा साहित्य की विशेष प्रशंसा हुई है। अब तक दो कहानी संग्रह 'टीले पर चाँद' और 'बोधिसत्व' प्रकाशित हुए है। तथा तीन उपन्यास 'अब लौं नसानी', 'डींग' और 'बस्तर-बस्तर' प्रकाशित हुए हैं।

### तृतीय अध्याय : लोकबाबू के कथा साहित्य का कथ्यगत अध्ययन :

कथ्य का शाब्दिक अर्थ,"कहने योग्य, सरल साधारण भाषा में प्रचलित जो कहा जाए, या वार्ता कथा का मूल रूप कथ्य में निहित रहता है। यदि कहा जाए, 'कथा' शब्द का बदला हुआ या परिवर्तित रूप 'कथ्य' है, तो यह तर्ग संगत नहीं होगा। 'कथा' का शाब्दिक अर्थ होता है, पौराणिक आख्यान या कल्पित आख्यान। 'कथ्य' कथा साहित्य की आत्मा है। 'कथ्य' वास्तव में कथावस्तु या विषयवस्तु ही है। विभिन्न घटनाओं, घात-प्रतिघातों और क्रिया व्यापारों से मिलकर कथासाहित्य का जो कथ्य बनता है, उसे 'वस्तु',

‘विषय-वस्तु’, ‘अन्तर्वस्तु’, ‘कथा- वस्तु’ या ‘कथानक’ कहते हैं। इस दृष्टिसे ‘लोकबाबू’ के संपूर्ण कथा साहित्य का कथ्य की दृष्टि से विस्तार से अध्ययन किया जायेगा। साहित्यकार ‘कथ्य’ या ‘कथावस्तु’ के माध्यम से समाज में फैली बुराइयों व कुप्रथाओं का समाधन ढूँढ़ने का प्रयास करता है । और अतीत से प्रेरणा ग्रहण कर वर्तमान का सुधार करता है।

‘लोकबाबू’ का साहित्य आदिवासी समाज और आम जन-जीवन से जुड़ा है। कथाकार लेखक ‘लोकबाबू’ जी उपन्यास ‘बस्तर-बस्तर’ में बताया कि यह उपन्यास नक्सल हिंसा और आतंक से जुझते बस्तर अंचल की कथा पर आधारित है। इसमें प्रयाग ऐतिहासिक काल, मिथक, इतिहास और वर्तमान काल को एक साथ प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में बस्तर अंचल की कला-संस्कृति, परम्परा और भाषा जैसे विषयों को स्पर्श करते हुए नक्सल हिंसा की वजह से इस अंचल के सामाजिक-आर्थिक विकास में हो रहे विपरीत प्रभावों पर भी प्रकाश डाला गया है। यह उपन्यास दो अलग-अलग कथानकों पर आधारित है। उपन्यास का पहला कथानक बस्तर के इतिहास को वर्तमान तक लाता है।

“यह उपन्यास बस्तर की जिन्दगी और बीते हुए की बड़ी मार्मिक गाथा है। बस्तर सभी को आकर्षित करता है, क्योंकि वहाँ एक बड़ी लड़ाई लड़ी गई। वहाँ बड़ी उथल-पुथल हुई। वह सबसे समृद्ध भारत का इलाका था, जहाँ संसार की बहुत बड़ी लूट लम्बे समय तक दर्ज रही। बस्तर की अपराइजिंग आदिवासियों की लम्बी लड़ाई, जिसके अनेक परिदृश्य हैं। वहाँ आदिवासी संस्कृति मरी नहीं है, वह नुमाइश की चीज भले बना दी गई हो, उसके उत्कर्ष को भले चोटें पहुँचाई गई हों। लोकबाबू इस वृत्तांत को उन सबको बता रहे हैं, जिन्हें इसके बारे में नहीं जानते। वे छत्तीसगढ़ के नेटिव हैं। उन्होंने यह उपन्यास आधुनिकता और शिल्प के जरिये नहीं, अपने मर्म से धीरे-धीरे सालों में लिखा है। उनकी कलम से सच्चाई छन-छन कर नहीं रक्त की बूँदों की तरह आई है। स्याही कम लगती है, लहू ज्यादा खर्च होता है।”

## चतुर्थ अध्याय : लोकबाबू के कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श :

वर्तमान में ‘आदिवासी’ शब्द का प्रयोग उस जनसमूह के लिए किया जाता है, जो सदियों से गिरी गुफाओं, जंगलों, पहाड़ों, समुद्रतटीय स्थानों, मरूस्थल एवं द्वीप समूहों में जीवन-यापन करते हैं। एक विशेष पर्यावरण में रहते हैं, एक विशिष्ट बोली बोलते हैं, और एक जैसे देवी-देवताओं को मानते हैं। ये लोग, आज भी आदिम संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आदिवासियों का व्यवहार अन्य भारतीय समाजों के व्यवहार से विशिष्ट होता है। जो उनके खान-पान, वेश-भूषा व धर्म में परिलक्षित होता है, उनके समाज को सरल समाज के रूप में पहचान दिलाते हैं।

हिंदी साहित्य में आदिवासी आंदोलन का उभार आया हुआ है। स्त्रियों, किसानों, दलितों, आदिवासियों और जातीयताओं की ‘नई’ एकजुटता ने ऐसी मांगें और मुद्दे उठाए, जो स्थापित सैद्धांतिक और राजनीतिक मुहावरों के माध्यम से आसानी से समझे और सुलझाए नहीं जा सकते थे। इन अस्मिताओं ने

अपने साथ होने वाले शोषण के लिए अपनी खास अस्मिता को कारण बताया और उस शोषण तथा भेदभाव से संघर्ष के लिए उस संबंधित अस्मिता, पहचान को धारण करने वाले समुदाय को अपने साथ लेकर अपनी मुक्ति के लिए सामूहिक अभियान चलाया। इसलिए इसे अस्मितावाद की संज्ञा दी गई। वंचितों के शोषण के खिलाफ उठ खड़ी हुई मुहिम में सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन के अलावा साहित्यिक आंदोलन ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। आदिवासी साहित्य आम जनजीवन उसी का प्रतिफल है। इसी तरह 'लोकबाबू' के साहित्य में आदिवासी के प्रति हो रहे अन्याय, अत्याचार इसका पर्दा फास इस अध्याय के विवेचन किया जायेगा।

**पंचम अध्याय : लोकबाबू के कथासाहित्य में जनजीवन :**

औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की प्रक्रिया ने किस प्रकार जनजातीय समाज को अपने पारंपरिक संसाधनों से वंचित करके श्रमिक बनने की त्रासद नियति की तरफ धकेल दिया है। यह अध्याय इस तथ्य की ओर भी संकेत करता है। औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की प्रक्रिया इनके परम्परागत मूल्यों एवं मान्यताओं को तहस-नहस कर के किस प्रकार इनको कुप्रवृतियों की ओर उन्मुख करती हैं, और किस प्रकार इनका शोषण होता है, इन पहलुओं का सूक्ष्म चित्रण इस अध्याय में किया जायेगा।

'लोकबाबू' के अपने कथासाहित्य में जनजातियों व्याप्त धार्मिक आस्था एवं अंधविश्वासों को रेखांकित किया है। जहाँ तक जनजातीय क्षेत्रों में धर्मान्तरण का प्रश्न है, तो दूसरी तरफ हिन्दू धर्म के ठेकेदार इन जनजातियों के साथ धर्म-परिवर्तन के नाम पर सुख-सुविधाओं का प्रलोभन देकर छल करते हैं। धर्म के नाम पर किस प्रकार ढ़ोंगी बाबा छोटी बच्चियों के साथ दुष्कर्म करते हैं, इसका यथार्थ संकेत 'लोकबाबू' के साहित्य में मिलता है।

प्रस्तुत शोध कार्य जनजीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डालता है, जिनमें लोक-कथा, लोक-गीत, लोक-नृत्य, लोक-विश्वास, पर्व-त्योहार, युवा-गृह, आखेटन, गुदना आदि प्रमुख है। वस्तुतः जनजीवन में मनुष्य की परम्परागत रूप से चली आ रही मान्यताओं एवं किंवदंतियों का विवेचन किया जायेगा।

**षष्ठ अध्याय : शिल्प विधान :**

किसी भी साहित्यिक कृति का भावपक्ष जितना महत्वपूर्ण होता है, उतना ही उसका अभिव्यक्ति शिल्प पक्ष यानि कलापक्ष महत्वपूर्ण होता है। उस रचना की श्रेष्ठता उसके भाव सौंदर्य के साथ-साथ कलात्मक सौंदर्य पर भी निर्भर रहती है। इसीलिए हर रचनाकार भाषा, रस. छंद, अलंकार, प्रकृति वर्णन तथा शैली की कलात्मकता के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति प्रभावात्मक रूप से करने का प्रयास करता है। इसे ही भाषा सौंदर्य या कला सौंदर्य कहा जाता है। इस तरह से मैंने इस अध्याय में 'लोकबाबू' के कथासाहित्य में अभिव्यक्त ' शिल्प पक्ष' का अध्ययन किया है।

'लोकबाबू' के कथासाहित्य की भाषा की सर्वमान्यता और उत्तम प्रदान करती है। उनके कथासाहित्य की विशेषताओं में भाषा की सहजता, सरलता, लालित्य यह गुण पाए गये है। भाषा सौंदर्य के विविध उपकरण, विशेषण, रूपक, उपमान, शब्द शक्तियाँ, प्रतीक, विम्ब आदि के सौंदर्य को द्विगुणित करते हैं। 'लोकबाबू' के कथासाहित्य की  भाषा, शैली एवं शिल्प विधान की दृष्टि से मूल्यवान हैं ।इसी कारण ही 'लोकबाबू' जी हिंदी कथासाहित्य में अपना अलग से स्थान बनाने में सफल हुए है ।

**सप्तम अध्याय : उपसंहार :**

उपसंहार इस शोध कार्य का अंतिम अध्याय है, इस अध्याय में सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध को सार रूप में प्रस्तुत किया जाएगा । अन्य अध्यायों में वर्णित सम्पूर्ण सामग्री का निचोड़ रखा गया है। अंत में उपसंहार के रूप में सभी अध्यायों के निष्कर्ष निकालकर विश्लेषण ओर अवलोकन किया गया है। उपसंहार के बाद परिशिष्ट में 'लोकबाबू' जी का साक्षात्कार दिया जाएगा, साथ ही आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश और पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी जाएगी ।

'लोकबाबू' द्वारा रचित समस्त कथासाहित्य यह आदिवासी एवं आम जन-जीवन चेतना से भरा हुआ एक पिटारा है। मानवीयता, सेवा, धर्म, दर्शन, प्रशासन संबन्धी जागरूकता, सामाजिकता, भाईचारे का जो संगम इनके साहित्य में निहित है, उसका विवेचन विश्लेषण ही इस शोधकार्य का उद्देश्य रहेगा ।

## 7. अनुसंधान का महत्व : (Importance of Research) :

'लोकबाबू' जी के कथा साहित्य में जीवन के प्रति गहन अन्तर्दृष्टि रही है। इन्होंने आदिवासी समाज में फैली विसंगतियों और विषमताओं को खुली आंखों से देखा है, तथा अनुभव किया है। भारतीय समाज के आदिवासी जीवन का जितना यथार्थवादी चित्रण 'लोकबाबू' के कथा साहित्य में उद्घाटित किया है, उतना अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। 'लोकबाबू' का कथा साहित्य आदिवासी व्यक्ति के जीवन के संपूर्ण पहलुओं को गहराई से चित्रित करता है।

1. सामान्यत: प्रत्येक आदिवासी समूह नगरों से दूर पर्वतों व जंगलों के दुर्गम स्थानों पर निवास करते हैं। जिनका सम्बन्ध एक निश्चित भू-भाग से होता है। इनको आज भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसी समस्याँओं को समाज के सामने लाना मेरे अनुसंधान का उद्देश्य रहा है।
2. सभी आदिवासियों की अपने क्षेत्र विशेष की एक निश्चित भाषा होती है, जो उसे एक अलग पहचान देती है। जैसे- मुण्डारी, संताली, गोंडी, मीरी, अगरिया आदि। इसी जनजाति का परिचय देना ही मेरे शोधकार्य को महत्व दर्शाया जा सकता है।
3. आदिवासियों में शिक्षा व प्रौद्योगिक विकास का स्तर निम्न होता है। इसी विकास के दष्टि से मेरे अनुसंधान का महत्व हो जायेगा ।

4. आदिवासी संस्कृति में विशेषीकरण और श्रम-विभाजन का अभाव होता है। इनकी अधिकांश सामाजिक और आर्थिक क्रियाएँ सामूहिकता के आधार पर की जाती है।
5. आज सरकार का यह दायित्व है कि, सांस्कृतिक रूप से अति समृद्ध जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए कुछ कारगर कदम उठाए जिससे इनका सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक विकास तो हो साथ ही इनकी सांस्कृतिक विरासत भी सुरक्षित रहे।
6. वर्तमान समय में ये आदिम जनजातियाँ भी नए सामाजिक-आर्थिक बलों के प्रभाव में आते जा रहे हैं। नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में अधिक उपभोग, प्रतिस्पर्धा और तीव्र विकास को ही ऊँचे मूल्य के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारतीय समाज ने इन क्षेत्रों में विकास की जो भी योजनाएँ एवं परियोजनाएँ विकसित की हैं उनसे ये भारतीय जनजातियाँ अत्यन्त प्रभावित हुई हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि, विकास की इन योजनाओं का इन जनजातियों पर कितना सकारात्मक एवं कितना नकारात्मक प्रभाव पड़ा। यह दर्शाना मेरे अनुसंधान कार्य की महत्ता स्पष्ट कर सकती है।
7. वर्तमान समय में जल, जंगल एवं ज़मीन के अधिग्रहण के फलस्वरूप जनजातीय समाज के समक्ष भुखमरी, कुपोषण एवं अस्तित्व का संकट उपस्थित हो गया है। अशिक्षा भी जनजातीय समाज की एक प्रमुख समस्या है। इसी अशिक्षा के कारण जनजातीय समाज अनेक प्रकार की मान्यताओं एवं अंधविश्वासों में लिप्त है जैसे भूत-प्रेत एवं डायन जैसे अंधविश्वास। आज भी जनजातीय समाज बीमार होने पर डॉक्टर पर नहीं वरन् ओझा एवं तान्त्रिक पर विश्वास करते हैं, और आज भी उनके समाज में महिलाओं को डायन बताकर मार दिया जाता है। ये जनजातीय समाज अविकसित हैं इसलिए मुख्यधारा से जुड़ नहीं सके हैं। इसलिए यह सभ्य समाज का कर्तव्य है कि, इन पिछड़ी हुई जनजातियों के विकास के लिए कदम उठाए।
8. आधुनिक काल में भारतीय आदिवासी समाज अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जिनमें विस्थापन, पलायन, अशिक्षा, ऋण ग्रस्तता, बेरोजगारी, अस्मिता आदि पर प्रकाश डाला गया है।

**निष्कर्ष :**

1. आधुनिक कथा साहित्य में नवीन चेतना एवं यथार्थ का संचार करने वाले उत्कृष्ट कोटि के कथाकारों में 'लोकबाबू' जी का स्थान सर्वोपरि है।
2. 'लोकबाबू' का कथा साहित्य में मानव जीवन की समस्त घटनाओं को उनकी संपूर्णता में देखा जा सकता है। इन्होंने मध्यवर्गीय जीवन को भोगा और उसे यथार्थ रूप में अपने कथा साहित्य के माध्यम से प्रकट किया।
3. 'लोकबाबू'  का कथा साहित्य बहुत विस्तृत और व्यापक है। इनके कथा साहित्य की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि, इनके कथा साहित्य में जहॉं एक ओर आदिवासी, दलित, नक्शलवादी, आम जनजीवन की समस्या आदि को उद्घाटित किया गया है, वहीं दूसरी ओर आदिवासीयों की शिक्षा क्षेत्र की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है।
4. इनके कथा साहित्य में जीवन के प्रति गहन अन्तर्दृष्टि रही है। इन्होंने आदिवासी समाज में फैली विसंगतियों और विषमताओं को खुली आंख से देखा तथा अनुभव किया है। भारतीय समाज के आदिवासी जीवन का जितना यथार्थवादी चित्रण 'लोकबाबू' के कथा साहित्य में उद्घाटित किया है, उतना अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। 'लोकबाबू' का कथा साहित्य आदिवासी व्यक्ति के जीवन के संपूर्ण पहलुओं को गहराई से चित्रित करता है।
5. आदिवासी जीवन-दर्शन, आदिवासी जीवन मूल्य, आदिवासी साहित्य, आदिवासी संस्कृति अनेक समस्याएॅं 'लोकबाबू' के साहित्य में चित्रीत है।
6. आज आदिवासी साहित्य को मुख्य धारा में जोड़ने की सख्त आवश्यकता है। इस दृष्टि से 'लोकबाबू' का कथा साहित्य  एक प्रामाणिक दस्तावेज है।
7. समग्रत: कहा जा सकता है कि, 'लोकबाबू' ने अपने कथासाहित्य में आदिवासी जीवन मूल्यों का चित्रण हुआ है।
8. 'लोकबाबू' का कथा साहित्य में आदिवासी समाज जीवन की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। आदिवासी समाज और उनकी संस्कृति को गहराई से समझने का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

# परिशिष्ट

## संदर्भ सूची


**(अ) मूल ग्रंथ**

1. अब लौं नसानी, (उपन्यास), कथाकार लोकबाबू, राजपाल ॲन्ड सन्स,
2. डींग, (उपन्यास), कथाकार लोकबाबू, राजपाल ॲन्ड सन्स,
3. बस्तर बस्तर, (उपन्यास), कथाकार लोकबाबू, राजपाल ॲन्ड सन्स,
4. टीले पर चाँद, (कहानी संग्रह), कथाकार लोकबाबू, राजपाल ॲन्ड सन्स,
5. बोधिसत्व, (कहानी संग्रह), कथाकार लोकबाबू, राजपाल ॲन्ड सन्स,

**(आ) आधार ग्रंथ :**

1. डॉ. अहमद मोहम्मद जीमल, अंतिम दशक के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का चित्रण, अन्नपूर्ण प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2000
2. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1997
3. डॉ. अस्थाना, हिन्दी कथासाहित्य समकालीन संदर्भ, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा प्र.सं. 1981
4. डॉ. वीरेन्द्र कुमार, हिन्दी उपन्यासों में मार्क्सवादी चेतना, संजय प्रकाशन, दिल्ली: प्र.सं. 1994
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, अठारहवां सं. 2005
6. सं. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, अड़तीसवां पुनर्मुद्रण, 2011
7. ब्रह्मस्वरूप शर्मा, हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा, उत्तर प्रदेश, मनु प्रकाशन, प्र.सं. 2000
8. रामविलास शर्मा, परम्परा का मूल्यांकन, राज कमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1981
9. डॉ. महावीर सिंह चौहान, रामदरश मिश्र की सृजन यात्रा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1991
10. डॉ. रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण,
11. रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1968 ई.

**(इ) हिन्दी कोश ग्रन्थ :**

1. नालन्दा विशाल शब्दसागर, श्री नवल जी. आदीश बुक डिपो, नई दिल्ली, 2010
2. मानक हिन्दी अंग्रेजी कोश, राममूर्ति सिंह, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 1974
3. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. रामचन्द्र वर्मा पष्ठ सं. 2014
4. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी, संवत् 2018

5. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी, संवत् 2009
6. श्यामसुन्दरदास (सं.) हिन्दी शब्द सागर (चौथा भाग) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2018
7. हरदेव बाहरी, राजपाल हिन्दी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2002

**(ई) पत्र-पत्रिकाएँ :**

1. आजकल, नई दिल्ली
2. आलोचना, नई दिल्ली
3. समालोचक, जयपुर
4. साहित्य अमृत, नई दिल्ली
5. सृजन कुंज, श्रीगंगानगर
6. नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

**(उ) अंग्रेजी ग्रन्थ :**

1. Bester Mark, Marriage and Society Macmillan and Co London, Ed- 1976
2. Edward- B. Taylor Primitive Culture Penguin Books, Ed- 1963
3. Forster E.M. Aspects of Novel London, Ed- 1964
4. Hertskovitz M.J. Man and His works Ed- 1965
5. Hudson W.H. An Introduction to the study of Literature London, Ed- 1966

## (ऊ) Websites

1. www.books.google.com
2. www.hindiliterature.com
3. www.wikipedia.org/wiki/mausam
4. www.ramdarashmishrablogspot.com

शोधकर्ता
शेख हुसैन मैनोद्दीन
(M.A.M.Phil. SET)

शोधनिर्देशक
डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी
(M.A.M.Phil.Ph.D. SET)
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर